Front Page of Book

भारत के महान शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों, साहित्यकारों एवं महापुरुषों का योगदान

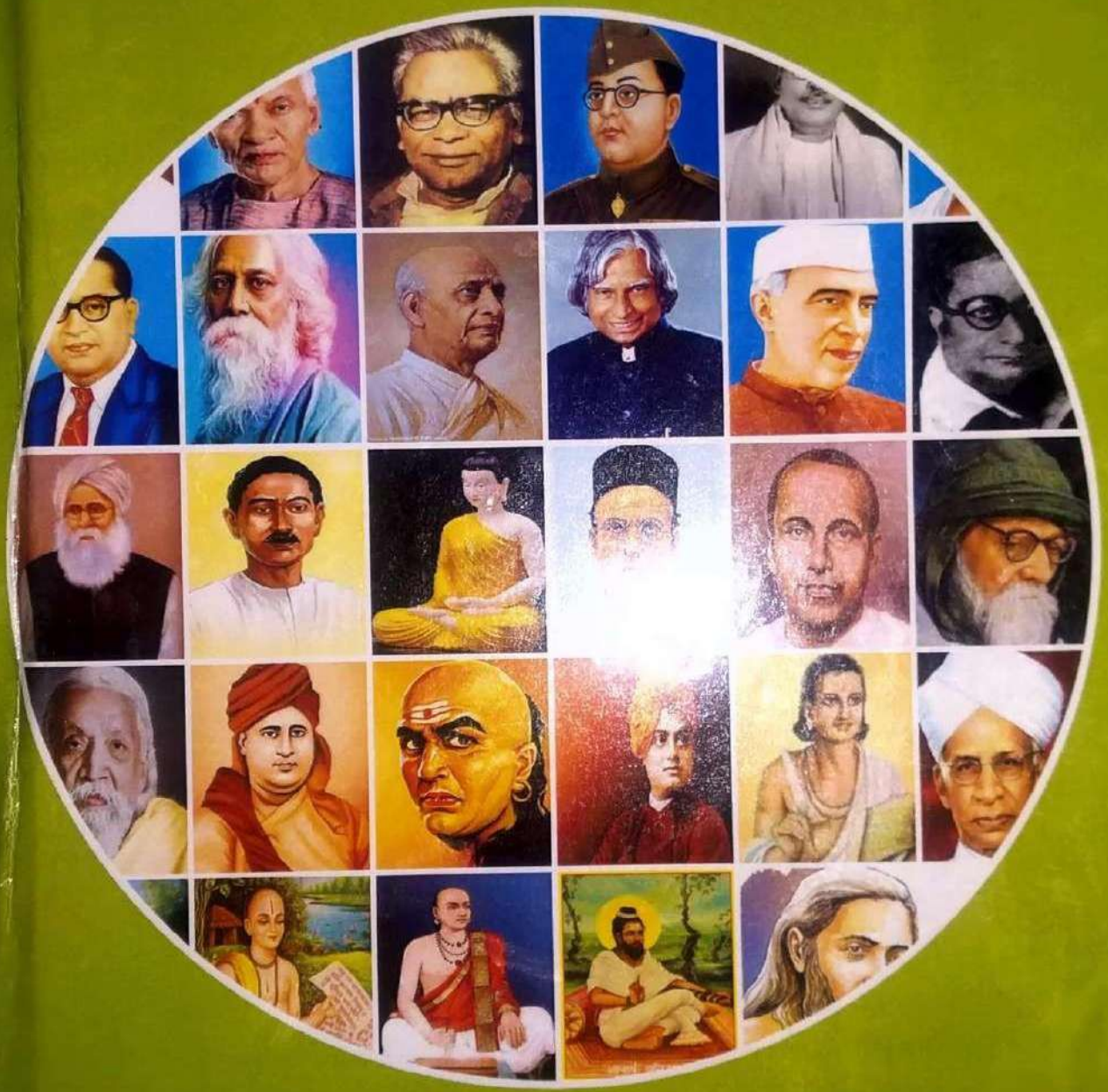

संपादक मंडल

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

भारत के महान शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों, साहित्यकारों एवं महापुरुषों का योगदान

संपादक मंडल
शिक्षा संकाय
[illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN 978-93-92611-51-3

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं०17, विजय पार्क, दिल्ली-110053
दूरभाष : 08527 460252, 09990236819
E-Mail : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस

ए-9, नवीन इन्क्लेव गाजियाबाद,
उत्तरप्रदेश पिन- 201102

मूल्य : [illegible] रुपये

First Page of Published Chapter "Mahaan Sahitkaar JayaShankar Prasad ka path Pardarshan
"

प्रतिष्ठित हस्ताक्षर जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी-साहित्य के महान एवं उच्च-कोटि के साहित्यकार हैं जो भारत के कालजयी रचनाकारों में अग्रगण्य हैं। उनमें चिन्तन-मनन की अपार गम्भीरता के साथ-साथ भावानुभूति की प्रगाढ़ता है। जयशंकर प्रसाद सफल नाटककार, क्रान्तदर्शी कवि एवं महान कथाकार है। इनका साहित्य-सृजन लोकमंगल, राष्ट्रीय भावना, प्रेम व त्याग, नारी-सशक्तिकरण, सांस्कृतिक पुनरूत्थान, सामाजिक शिष्टाचार, मानवतावाद, समरसता एवं नैतिक मूल्यों से ओत-प्रोत है, जो अतीत से जुड़े रहकर भी आज के लिए उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद कृत 'आकाशदीप'कहानी का केन्द्रबिन्दु निस्वार्थ भाव से 'मानव-सेवा' है। इस कहानी की नायिका चम्पा अपने आप में आकाशदीप है, उसका नि:स्वार्थ प्रेम समर्पण व त्याग की मूर्त, आकाश की तरह विराट एवं व्यापक और आकाशदीप की भाँति दूसरों का पथ-प्रदर्शन करने वाला है। इस कहानी का पात्र बुधगुप्त जोकि एक जलवदस्यु है, उसमें हिंसात्मक, क्रूरता जैसी प्रवृतियाँ है, परन्तु चम्पा का प्रेम उसे कोमल, उज्ज्वल मनोवृत्ति वाला एवं कई द्वीपों का स्वामी बना देता है। चम्पा का पहला प्रण था कि जिसने उसके पिता की हत्या की है वह उससे प्रतिशोध लेगी, जब उसका प्रेम बुधगुप्त से होता है वह इस बात से अनभिज्ञ होती है कि वह ही उसके पिता का हत्यारा है। इस सच का ज्ञान होने पर कि बुधगुप्त, उसके पिता का हत्यारा है और दूसरी तरफ वह उसका प्रेमी भी है तो चम्पा, बुधगुप्त और प्रतिशोध की भावना दोनों का त्याग कर 'चम्पा' नामक द्वीप में आजीवन रहकर वहाँ के द्वीपनिवासियों की सेवा-सुश्रुषा करती है। यहाँ पर जयशंकर प्रसाद एवं कवि रामधारी सिंह की प्रतिशोध को त्यागने की भावना समान हो उठती है जैसे कि कवि दिनकर कहते हैं कि-

"मानव मन को बेधते फूल के दल कोमल,
आदमी नहीं कटता बरशों और तीरो से,
लोह की कड़ियों की साज़िश बेकार हुई,
बाँधों मनुष्य को शबनम की जंजीरों से।"[1]

और दूसरी तरफ 'आकशदीप' कहानी की नायिका चम्पा से मुख से लेखक जयशंकर प्रसाद कहलाते हैं कि ''बुधगुप्त आज मैं अपने प्रतिशोध का कृपाण अतल जल में डुबो देती हूँ। हृदय ने छल किया बार-बार धोखा दिया।"[2]

उक्त दोनों उदाहरणों में प्रतिशोध की भावना को त्याग कर प्रेम के मार्ग पर चलने का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष संदेश दिया गया है। 'आकाशदीप'अर्थात् चम्पा का प्रेम रूपी प्रकाश है जो पितृप्रेम से प्रेमी के प्रेम और प्रेमी के प्रेम से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए समर्पित हो जाता है।

' स्वर्ग के खण्डहर में' कहानी में आचार्य शेख द्वारा बनाए सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य व आनन्द रूपी स्वर्ग के खण्डहर होते हुए दिखाए गए हैं। स्वर्ग के खण्डहर होने का कारण अमर्यादित, अनैतिक, ऐश्वर्ययुक्त, परिश्रमहीन एवं अकर्मण्यता है। कहानी में 'स्वर्ग पूंजीवाद और पृथ्वी समाजवाद का प्रतीक है। उदाहरणार्थ: ''स्वर्ग। इस पृथ्वी को स्वर्ग के ठेकेदारों से बचाना होगा। पृथ्वी का गौरव स्वर्ग बन जाने से नष्ट हो जायेगा। इसकी स्वाभाविकता साधारण स्थिति में